राजस्थानी नीतिकाव्य में शकुन सूचक नीति

[1]डॉ. सुधा शर्मा
[1]सेवानिवृत्त प्रधानाचार्या
[1]2/229 मुक्ता प्रसाद नगर, बीकानेर–334004 (राज.), भारत

सारांश : शकुन विचार लोक परम्परा का अभिन्न अंग रहा है। प्राचीन काल से ही यह मान्यता रही है कि प्रकृति भविष्य में होने वाली शुभ अथवा अशुभ घटना का पूर्व संकेत देती है। भारत में ही नहीं अपितु समस्त विश्व में शकुन प्रचलित हैं। शकुन सूचक नीति वचनों का मूल उद्देश्य व्यक्ति और समाज की मंगल कामना रहा है। इस विषय की सामाजिक उपादेयता से प्रेरित इस शोधपत्र में राजस्थानी नीतिकाव्य में शकुन सूचक नीति वचनों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है, जो एक नूतन प्रयास है।

मूल शब्द **– नीति, नीतिकाव्य, राजस्थानी नीतिकाव्य, शकुन सूचक नीति**

1. प्रस्तावना – शकुन विचार लोक परम्परा का अभिन्न अंग रहा है। शुभ–अशुभ संकेतों में विश्वास सदैव से मानव सोच का अंग रहा है। भारत में ही नहीं अपितु समस्त विश्व में शकुन प्रचलित हैं। प्रकृति मनुष्य पर आने वाले संकट से पूर्व उसे सतर्क एवं सचेत रहने हेतु विभिन्न प्रकार के संकेत देती है, जिससे वह आने वाले संकट से बचने का उपाय कर सके। कतिपय लोग शकुन विचार को अंध विश्वास मानते हैं, किन्तु अनेक लोगों की शकुनों पर आस्था इनके सामाजिक महत्त्व को प्रदर्शित करता है। शकुन सूचक नीति वचनों का मूल उद्देश्य व्यक्ति और समाज की मंगल कामना रहा है। इस विषय की सामाजिक उपादेयता से प्रेरित इस शोधपत्र में राजस्थानी नीतिकाव्य में शकुन सूचक नीति वचनों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है, जो एक नूतन प्रयास है।

2. शकुन सूचक नीति विचार

प्राचीन काल से ही यह मान्यता रही है कि प्रकृति भविष्य में होने वाली शुभ अथवा अशुभ घटना का पूर्व संकेत देती है। किसी भी शुभ कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व शकुन विचार करना उचित माना जाता है। राजस्थानी नीतिकाव्य में प्रमुख रूप से विशेष कार्य हेतु प्रस्थान (यात्रा), शिक्षारम्भ, नवीन वस्त्र धारण, विवाह आदि अवसरों, वर्षा एवं कृषि के पूर्वानुमान संबंधी शकुन सूचक विचार वर्णित हैं।

कवियों ने वार, नक्षत्र, तिथि, समय, विभिन्न प्रकार के मनुष्यों, पशुओं, पक्षियों, कीड़ों अथवा वस्तुओं के मिलने या दृष्टिगत होने, विभिन्न क्रिया करने एवं वाणी बोलने, छींक आने, शारीरिक अंगों के फड़कने तथा प्रकृति के संकेतों से संबंधित दोहों में, अनुभवजन्य शकुन विचार व्यक्त किए हैं।

किसी शुभ कार्य हेतु घर से निकलने अथवा यात्रा हेतु प्रस्थान करते समय, शकुन विचार किया जाता रहा है। यदि शुभ कार्य के लिए जाते समय रास्ते में बच्चे सहित माँ, बछड़े सहित गाय या मंगल तिलक लगाये व्यक्ति मिले, तो कार्य अवश्य सिद्ध होता है –

बचा सहेती मायड़ी, वछा सहेती गाय।
मँगळ तिलक जे नर मिळै, कमी न राखै काय।।[1]

इसी प्रकार दही, सुहागिन स्त्री, बनिया, गुड़ और हरे घास का मिलना, मनोकामना पूर्ण करने वाला माना गया है –

दही सवामण, वांणियौ, गुळ अर लीलौ घास।
माल लियां सांमा मिळै, उत्तम पूरै आस।।[2]

कवियों ने कार्यसिद्धि हेतु गमन करते समय कतिपय अशुभ शकुनों को भी लक्षित किया है –

आटा–कूटो, घी, घड़ो, छूटाँ केसाँ नार।
विना तिलक बामण मिळै, निहचै खूटो काळ।।[3]

अन्य अपशकुन इस प्रकार बताये गये हैं –

कान हलावै कूतरौ, छटकै सनमुख छींक।
वहतां कुछ होसी बुरी, नह कारज व्है नीक।।[4]

इसी प्रकार गमन करते समय यदि कन्या के सिर पर कलश हो और वह दाहिनी ओर हो, तो यह शुभ माना जाता है।[5] इसके विपरीत काँटे, अन्न की भूसी अथवा काले नाग के दर्शन, गमन के समय अशुभ माने गये हैं।[6]

इसी सन्दर्भ में प्रतिपदा और बुधवार को यात्रा करना अशुभ माना गया है –

तिथियां में पिड़वा तजौ, वारां में बुधवार।
जोग कड़कड़ा जोग में, टार सकै तौ टार।।[7]

चन्द्रमा और दिशाशूल की स्थिति से भी यात्रा–संबंधी शकुन विचार किया जाता है –

दिसासूळ डावौ भलौ, परख जोगणी पूठ।
चोखो सनमुख चन्द्रमा, लावै लिछमी लूट।।[8]

नवीन वस्त्र धारण करने हेतु बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार शुभ माने गये हैं –

कपड़ा पै'रौ तीन बार बुध बिसपत सुकरवार।[9]

कवियों ने विद्याध्ययन हेतु प्रतिपदा के दिन को अशुभ माना है –

पड़वा पाठ भुळावणी छोरां नै खिलावणी।[10]

किसी कार्य को प्रारम्भ करने और उसमें स्थायित्व लाने के लिए शनिवार को सर्वोत्तम माना गया है –

थावर कीजे थरपना बुध कीजे बोपार।[11]

छींक से भी शकुन विचार किया जाता है। छींक होने पर दूसरे के घर जाना अशुभ होता है –

छींकत खाये छींकत पीये, छींकत रहिये सोय।
छींकत पर घर कदे न जाये, आछी कदे न होय।।[12]

कवियों ने छींक को शुभ और अशुभ दोनों माना है –

छींक असुभ सब काम परि, अघो ओरघ अतिनष्ट।
सनमुख चिंता सब हरै, जोम जाम यो षष्ट।।[13]

आँख के फड़कने के आधार पर भी शकुन विचार किया जाता है –

आँख फड़कै बांई, कै बीर मिलै कै सांई।
आँख फड़कै दहणी, लात धमूका सहणी।।[14]

कवियों ने बांई आँख के साथ–साथ बांये अंग फड़कने को प्रिय के आगमन का संकेत माना है –

बाँव़ों अंग फरकण लग्यो, फरकत बाँव़ीं आँख।
साजन आसी, हे सखी! चढ चौबारे झाँख।।[15]

विभिन्न पक्षियों एवं पशुओं के बोलने एवं विभिन्न क्रियाओं के करने पर भी शुभ एवं अशुभ शकुनों का उल्लेख किया गया है –

रात्यूँ बोलै कागला, दिन में बोलै स्याल।
कै नगरी राजा मरै, (कै) पड़ै अचूको काळ।।[16]

एक अन्य शकुन इस प्रकार है –

बाऊ तीतर बाऊ स्याळ, बाऊ खर बोलै असराल।
बाऊ घू घू घमाकरै, तो लंका को राज विभीषण करै।।[17]

राजस्थानी नीतिकाव्य में वर्षा संबंधी शकुन विचार विस्तार से किया गया है। इसका कारण मरुभूमि में कृषि कार्य का वर्षा पर अवलम्बित होना रहा है। ग्रह, नक्षत्र, दिवस एवं बादलों के स्वरूप से जहाँ वर्षा का संकेत मिलता है, वहीं कम वर्षा या अकाल की स्थिति का पूर्वानुमान भी होता है। कतिपय उदाहरण दृष्टव्य हैं।

यदि कलसे में पानी गर्म हो, चिड़ियाँ धूल में नहावें और चींटियाँ अंडे लेकर ऊपर चढ़ें तो भरपूर वर्षा होगी –

कळसै पाणी गरम है, चिड़ियाँ न्हावै़ धूर।
ले अंडा चींटी चढै, तो वरखा भरपूर।।[18]

ऊँटनी की गतिविधियों से भी वर्षा के आने का संकेत मिलता है –

आगम सूझै सांडणी, दोड़ै थळां अपार।
पग पटकै बैसै नहीं, जद मेह आवणहार।।[19]

कुम्हार द्वारा मिट्टी के बर्तन बनाते समय, यदि वायु की आर्द्रता के कारण वे बिखरने लगें, तो तीव्र वर्षा की संभावना होती है –

बिगड़ै बासण चाक पर, माटी अधिक उबार।
आड़ंग आगम समझलै, मेहां कहै कुम्हार।।[20]

यदि पौष कृष्णा दशमी को बादलों में बिजली चमके, तो पूरे भादों अच्छी वर्षा होगी तथा स्त्रियाँ तीज का त्यौहार धूमधाम से मनाएँगी –

पौष अंधारी दसमी, चमकै बादल बीज।
तौ भर बरसै भादवौ, सायधण खेलै तीज।।[21]

इसी प्रकार यदि शुक्रवार का बादल शनिवार तक रहे, तो वह बिना बरसे नहीं जाता है –

सुक्करवा़री वादली, रहै सनीचर छाय।
डंक कहै, सुण भड्डली, विन वरस्याँ नहिं जाय।।[22]

प्रातःकाल मेह का आडम्बर हो और संध्या को ठण्डी हवा चले, तो ये अकाल के लक्षण माने गये हैं –

परभाते गहडम्बरां, सांझे सीऴा वाव।
डंक कहै सुण भड्डली, काळां तणा सभाव।।[23]

यदि मृगशिरा नक्षत्र में हवा नहीं चली और जेठ में रोहिणी नक्षत्र में गर्मी नहीं पड़ी तो ये वर्षा नहीं होने के संकेत हैं –

मिरगा बाव़ न वाजिया, रोहण तपी न जेठ।
क्याँनै बाँधो झूँपड़ा, बैठो बड़ला हेठ।।[24]

जिस वर्ष दो आषाढ़ या दो भाद्रपद या दो आसोज हों, उस वर्ष अकाल पड़ेगा और अन्न सोने–चाँदी से भी महँगा हो जायगा –

दो असाढ दो भादव़ा, दो असोज के माँय।
सोना–चाँदी वेचकै, नाज बिसावो, साय!।।[25]

यदि मंगल का रथ आगे हो और सूर्य (का रथ) पीछे हो अर्थात् मंगल सूर्य से आगे वाली राशि में हो तो आरम्भ किये कार्य पूर्ण नहीं होते और जलाशय रिक्त रह जाते हैं (वर्षा नहीं होती) –

मंगळ–रथ आगै हुव़ै, लारै हुव़ै ज भाण।
आरंभ्या यूँ ही रहै, ठाली रहै निव़ाण।।[26]

इस प्रकार राजस्थानी नीतिकाव्य में शकुन सूचन संबंधी अनेक दोहे–सोरठे उपलब्ध हैं, जो सामान्य जन का जीवनोपयोगी मार्गदर्शन करते हैं। आधुनिक युग में शुभ कार्यों के प्रारम्भ करते समय, शकुन विचार करने की परम्परा आज भी जन–जन में प्रचलित है।

3. निष्कर्ष – राजस्थानी नीतिकाव्य में शकुन सूचक नीति विचारों के विवेचन से यह तथ्य स्पष्ट होता है कि प्रकृति द्वारा प्रदत्त शुभ–अशुभ संकेतों में विश्वास सदैव से मानव सोच का अंग रहा है। शकुन सूचक विचार वास्तव में हमारे पूर्वजों के मौलिक चिन्तन, मनन एवं अतीत के अनुभवों पर आधारित संचित ज्ञान है। इन विचारों का मूल उद्देश्य लोक–हित का सम्पादन है। परम्परागत अनुभूतिपरक होने से इनकी मानव–जीवन के लिए विशिष्ट उपयोगिता है, क्योंकि ये मानव जीवन को कल्याणमय बनाने का प्रयास करते हैं। राजस्थानी नीतिकाव्य में प्रमुख रूप से विशेष कार्य हेतु प्रस्थान (यात्रा), शिक्षारम्भ, नवीन वस्त्र धारण, विवाह आदि अवसरों, वर्षा एवं कृषि के पूर्वानुमान संबंधी शकुन सूचक विचार वर्णित हैं, जो सामान्य जन का जीवनोपयोगी मार्गदर्शन करते हैं। यद्यपि कतिपय लोग इन्हें अन्ध विश्वास मानते हैं, तथापि

राजस्थान के सामान्य जन की इनमें सदैव से गहन आस्था रही है। इसी कारण आधुनिक युग में शुभ कार्यों के प्रारम्भ करते समय शकुन विचार परम्परा का पालन आज भी जन–जन में प्रचलित है।

सन्दर्भ :

1. कविया, शक्तिदान, 2000, 'राजस्थानी दूहा संग्रह', साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, पृ. 145/804।
2. वही, पृ. 145/805।
3. स्वामी, नरोत्तमदास, 1961, 'राजस्थान रा दूहा', सादूळ राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट, बीकानेर, पृ. 58/155।
4. कविया, शक्तिदान, 2000, 'राजस्थानी दूहा संग्रह', पूर्वोद्धृत, पृ. 144/795।
5. ओझा, डॉ. जमनेश कुमार, 1988, 'मध्यकालीन दोहों में शकुन', मरु भारती, वर्ष 36, अंक 2, जुलाई 1988, पृ. 47/178।
6. वही, पृ. 47/179।
7. कविया, शक्तिदान, 2000, 'राजस्थानी दूहा संग्रह', पूर्वोद्धृत, पृ. 145/799।
8. वही, पृ. 145/800।
9. राठौड़, मनोहर सिंह, 2001, 'राजस्थानी कहावतां', भाग एक, राजस्थानी साहित्य एवं संस्कृति जनहित प्रन्यास, बीकानेर, पृ. 117।
10. राठौड़, मनोहर सिंह, 2003, 'राजस्थानी कहावतां', भाग तीन, राजस्थानी साहित्य एवं संस्कृति जनहित प्रन्यास, बीकानेर, पृ. 70।
11. वही, पृ. 18।
12. जोधा, समुद्रसिंह, 2009, 'राजस्थानी दोहावली', राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, पृ. 44/198।
13. ओझा, डॉ. जमनेश कुमार, 1988, 'मध्यकालीन दोहों में शकुन', मरु भारती, वर्ष 36, अंक 2, जुलाई 1988, पृ. 50/474।
14. जोधा, समुद्रसिंह, 2009, 'राजस्थानी दोहावली', पूर्वोद्धृत, पृ. 44/196।
15. स्वामी, नरोत्तमदास, 1961, 'राजस्थान रा दूहा', पूर्वोद्धृत, पृ. 178/4।
16. वही, पृ. 213/28।
17. जोधा, समुद्रसिंह, 2009, 'राजस्थानी दोहावली', पूर्वोद्धृत, पृ. 44/199।
18. स्वामी, नरोत्तमदास, 1961, 'राजस्थान रा दूहा', पूर्वोद्धृत, पृ. 210/6।
19. राठौड़, मनोहर सिंह, 2001, 'राजस्थानी कहावतां', भाग एक, पूर्वोद्धृत, पृ. 46।
20. प्रेम कुमार, 'मारवाड़ के पारम्परिक शकुन', पृ. 6। [http://ignca.nic.in/coilnet/rj186.htm]
21. राजस्थान की रजत बूँदें। [https://wikisource.org/wiki/Page:Rajasthan_Ki_Rajat_Boondein_(Hindi).pdf/92]
22. स्वामी, नरोत्तमदास, 1961, 'राजस्थान रा दूहा', पूर्वोद्धृत, पृ. 212/22।
23. कविया, शक्तिदान, 2000, 'राजस्थानी दूहा संग्रह', पूर्वोद्धृत, पृ. 146/807।
24. स्वामी, नरोत्तमदास, 1961, 'राजस्थान रा दूहा', पूर्वोद्धृत, पृ. 213/26।
25. वही, पृ. 212/21।
26. वही, पृ. 212/25।